द्वितीय

अध्याय

संबंधित शोध एवं साहित्य का पुनरावलोकन

द्वितीय - अध्याय
संबंधित शोध एवं साहित्य का पुनरावलोकन

2.1.0 भूमिका

प्रथम अध्याय में शोध समस्या पर प्रकाश डाला गया था। द्वितीय अध्याय में संबंधित शोध एवं साहित्य का पुनरावलोकन किया गया हैं। क्योंकि संबंधित पूर्व शोध एवं साहित्य का सर्वेक्षण न करने से जो अनुसंधान कार्य पहले अन्य अनुसंधानकर्ता द्वारा अच्छे प्रकार से किया जा चुका है, वह पुनः किया जा सकता है।

सम्बन्धित पूर्व शोध एवं साहित्य से तात्पर्य अनुसंधान की समस्या से सम्बन्धित उन सभी प्रकार की पुस्तकों, ज्ञानकोषों, पत्र–पत्रिकाओं व प्रकाशित तथा अप्रकाशित शोध प्रबन्धों एवं अभिलेखों आदि से हैं, जिनके अध्ययन से अनुसंधानकर्ता को अपनी समस्या के चयन, परिकल्पनाओं के निर्माण, अध्ययन की रूपरेखा तैयार करने एवं कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है।

2.2.0 संबंधित चरों पर किये गए शोध

2.2.1 सृजनात्मकता से संबंधित अध्ययन

विदेश हुए शोध अध्ययन

जहुरिया, रीटा (1988) ने विद्यार्थिर्ययों के व्यक्तित्व, सृजनात्मकता व निराशा पर उनकी हास्य प्रवृत्ति का प्रभाव विषय को दृष्टिगत रखते हुए शोध कार्य किया तथा निष्कर्ष निकाला कि हास्य व्यक्तित्व, सृजनशीलता व निराशा का उत्पादक अधिक है। प्रत्येक विद्यार्थी का व्यक्तित्व, अहम्, सामाजिकता, साहसीपन अलग–2 होता है। इनकी सृजनशीलता का सम्बन्ध हास्य क्षमता से होता है। जिन विद्यार्थियों में हास्य क्षमता कम होती है उनमें तनाव अधिक पाया जाता है।

लेसवेरने, एम0 आर (1995) ने 'छात्राध्यापक के व्यक्तित्व कारकों पर सृजनात्मकता के प्रभावों का अध्ययन' निष्कर्ष में यह पाया कि शिक्षा में प्रतिस्पर्धा रखने वाले सृजनात्मकता छात्राध्यापकों के कुछ व्यक्तित्व घटकों को जानने के लिए एक शोधकार्य किया। जिसके परिणाम इस प्रकार है कि– विनम्र, हठी तथा तनुक मिजाजी बी0 ए0 50 छात्राध्यापक तथा सुन्दर दिखने वाले छात्राध्यापकों पर शुद्वता के प्रभाव के क्रान्तिक अनुपात में महत्वपूर्ण अन्तर पाया गया। आत्मविश्वासी तथा विनम्र बी0ए0 50 छात्राध्यापकों एवं हठी एवं सुन्दर दिखने वाले छात्राध्यापकों पर वास्तविकता के प्रभाव में महत्वपूर्ण अन्तर पाया गया।

भारत में हुए शोध अध्ययन

सिंह, ओ.पी. (1982) ने हाई स्कूल के विद्यार्थियों का बुद्धि व सामाजिक आर्थिक स्तर के संदर्भ मे सृजनात्मकता का अध्ययन किया। मुख्य उद्देश्य – सृजनात्मकता बुद्धि व सामाजिक आर्थिक स्तर के बीच संबंध का अध्ययन करना। निष्कर्ष – शहरी विद्यार्थियों की बुद्धि का माध्य ग्रामीण विद्यार्थियों की तुलना में सार्थक रूप से उच्च पाया गया। विज्ञान के विद्यार्थियों की बुद्धि का माध्य कला के विद्यार्थियों की तुलना में सार्थक रूप से उच्च पाया गया।

हुमने, संघमित्रा – (2006) ने बुधनी तहसिल +2 स्तर के किशोरों की सृजनात्मकता के परिपेक्ष्य में समायोजनशीलता एवं वार्षिक उपलब्धि का अध्ययन। उद्देश्य – +2 स्तर के किशोरावस्था के छात्र एवं छात्राओं में सृजनशील व कम सृजनशील विद्यार्थियों की पहचान करना। +2 स्तर के किशोरावस्था के छात्र एवं छात्राओं में अधिक सृजनशील व कम सृजनशील का अध्ययन करना। सृजनशील एवं असृजनशील छात्र/छात्राओं की समायोजन क्षमता का अध्ययन करना। न्यादर्श– कक्षा 11 वी के नियमित अध्ययनरत 100 छात्र/छात्राओं को चुना जिनकी औसत आयु लगभग 15,16 वर्ष है। निष्कर्ष– अधिक सृजनशील एवं कम सृजनशील छात्र/छात्राओं के समायोजन के संदर्भ

में सार्थक अंतर नही है। सृजनशील एवं असृजनशील छात्र/छात्राओं की वार्षिक उपलब्धि के संदर्भ में सार्थक अंतर है।

सेमवाल, अर्चना (2007) ने सर्वशिक्षा अभियान के अंतर्गत प्रारम्भिक शिक्षा के लोकव्यापीकरण का भोपाल जिले के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं सृजनात्मकता के संदर्भ मे तुलनात्मक अध्ययन किया। न्यादर्श– इन्होंने न्यादर्श के रूप में भोपाल जिले के दो विकास खण्डों बैरासिया और फंदा की 10 शालाओं का चयन किया। इन्होंने इन विद्यालयों मे अध्ययनरत कुल 140 छात्र। छात्राओं का चयन किया। निष्कर्ष – ग्रामीण और शहरी विद्यार्थियों की उपलब्धि में अंतर है। ग्रामीण और शहरी विद्यार्थियों की सृजनात्मकता में अंतर है। ग्रामीण और शहरी छात्रों की उपलब्धि में अंतर है। ग्रामीण और शहरी छात्राओं की उपलब्धि में अंतर है। ग्रामीण और शहरी छात्रों की सृजनात्मकता के परिप्रेक्ष्य में अंतर नही है। ग्रामीण ओर शहरी छात्राओं की सृजनात्मकता में अंतर है। ग्रामीण छात्र/छात्राओं की सृजनात्मकता में अंतर है। शहरी छात्र/छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में कोई अंतर नहीं है। शहरी छात्र/छात्राओं की ग्रामीण छात्र/छात्राओ की सृजनात्कता में कोई अंतर नहीं है।

जायसवाल, शुक्ला (2009) ने संवेगात्मक बुद्धि तथा इसके विभिन्न क्षेत्रों का सृजनात्मकता पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया। प्रस्तुत अध्ययन का मुख्य उद्देश्य किशोर छात्र–छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि तथा इसके 10 क्षेत्रों का सृजनात्मकता पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना था। न्यादर्श के रूप में रायबरेली शहर के यू0पी0 बोर्ड के कक्षा 12 के विज्ञान वर्ग के 200 विद्यार्थियों को यादृच्छिक विधि द्वारा चयनित किया गया। अध्ययन के परिणामस्वरूप यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि संवेगात्मक बुद्धि तथा इसके 10 क्षेत्रों–स्व–सचेतता, परानुभूति, स्व–अभिप्रेरणा, सांवेंगिक स्थिरता, सम्बंधों का प्रबंधन, सत्यनिष्ठा, स्व–विकास, मूल्योन्मुखता, वचनवद्धता तथा परोपकारिता का वैज्ञानिक सृजनात्मकता पर प्रभाव पड़ता है और यह भी पाया गया कि

छात्र–छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि का विकास करके उनकी वैज्ञानिक सृजनात्मकता में कुछ मात्रा तक वृद्धि की जा सकती है।

शर्मा, (2009) ने विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि तथा सृजनात्मकता का अध्ययन किया। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य गुरूकुल, सरकारी तथा पब्लिक स्कूलों के छात्रों की संवेगात्मक बुद्धि तथा सृजनात्मक चिंतन के स्तर का अध्ययन करना था। इसके लिए इन तीनों प्रकार के स्कूलों के 100–100 विद्यार्थियों को चयनित किया गया। इन तीनों प्रकार के विद्यालयों का तुलनात्मक अध्ययन करने के परिणामस्वरूप यह प्राप्त हुआ कि पब्लिक स्कूलों के अनुकूल एवं उद्दीप्ति वातावरण के कारण गुरूकुल तथा सरकारी स्कूलों की अपेक्षा वहाँ के विद्यार्थियों की संवेगात्मक कुशलता और योग्यता तथा सृजनात्मक चिंतन की क्षमता उच्च प्राप्त हुई और गुरूकुल स्कूलों का वातावरण सरकारी स्कूलो के वातावरण से अधिक प्रभावपूर्ण होने के कारण वहाँ छात्रों में संवेगात्मक बुद्धि से सम्बंधित लक्षण सरकारी स्कूलों की अपेक्षा अधिक पाये गये परन्तु गुरूकूल तथा सरकारी स्कूलों के विद्यार्थियों के सृजनात्मक चिंतन में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

पेसवानी, रितु (2011) ने माध्यमिक स्तर पर शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं की सृजनात्मकता एवं उनकी अध्यापन अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन किया। उद्देश्य– अधिक सृजनशील एवं कम सृजनशील शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं की पहचान करना। शिक्षक एवं शिक्षिकाओं की सृजनात्मकता का तुलनात्मक अध्ययन करना। शिक्षक एवं शिक्षिकाओं की अध्यापन अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना। अधिक सृजनशील एवं कम सृजनशील शिक्षक एवं शिक्षिकाओं की अध्यापन अभिवृत्ति की तुलना करना। शिक्षक एवं शिक्षिकाओं की सृजनात्मकता तथा अध्ययन अभिवृत्ति में सह–संबंध ज्ञात करना। निष्कर्ष– माध्यमिक स्तर के शिक्षक/शिक्षिकाओं की सृजनात्मकता में सार्थक अंतर नही है। माध्यमिक स्तर के शिक्षक एवं शिक्षिकाओं की अध्यापन अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नही है।

2.2.2 शैक्षिक उपलब्धि से संबंधित अध्ययन

जैन आर, अरोरा (1995) "बालक और बालिकाओं के बीच उपलब्धि अन्तराल पर स्कूल के चरों का प्रभाव" के उद्देश्य पर शोध कार्य किया कि बालक और बालिकाओं की गणित भाषा की उपलब्धि में अन्तर किस सीमा तक है। लिंग अन्तराल के साथ स्कूल स्तर के चर किस हद तथा सम्बंधित है। इन्होंने पाया कि गणित और भाषा में बालकों की तुलना में बालिकाओं के अंक और मानक विचलन क्रमशः बारह प्रतिशत एवं ग्यारह प्रतिशत कम है।

चौहान ए.एस. (1996) "कक्षा 2 के विद्यार्थियों में गणित पठन बोध की उपलब्धि का अध्ययन" किया। इन्होंने पाया कि गणित कि उपलब्धि में बालिकाएं बालकों से श्रेष्ठ है तथा श्रेष्ठ बालिकाएं बालकों से पठन बोध की उपलब्धि में श्रेष्ठ है।

आसिफ अज़रा (1996) "रायसेन जिले में DPEP कार्यक्रम के अन्तर्गत उपलब्धि दर्ज संख्या और प्रतिधारणा" पर अध्ययन किया इन्होंने पाया कि बालकों और बालिकाओं की गणित भाषा एवं पर्यावरण की उपलब्धि में विशेष अन्तर नहीं हैं। लेकिन दर्ज संख्या में DPEP कार्यक्रम के पश्चात् वृद्धि हुई है।

कपूर मनोज (1998) भोपाल के "शहरी तथा ग्रामीण प्राथमिक शालाओं की कक्षा–2 के विद्यार्थियों की सीखना–सिखाना पैकेज के अन्तर्गत भाषा गणित एवं पर्यावरण अध्ययन विषय में उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन" विषय पर किया जिसमें पाया कि शहरी बालक तथा ग्रामीण विद्यार्थियों की भाषा गणित तथा पर्यावरण विषय में उपलब्धि समान होती है। तथा शहरी बालक तथा बालिकाओं की भाषा गणित तथा पर्यावरण विषय में उपलब्धि समान होती है। और गणित तथा पर्यावरण अध्ययन में उपलब्धि का भाषा की उपलब्धि के साथ धनात्मक सह–सबंध होता है।

अनीस मोहम्मद (2001) "शिक्षा गारंटी एवं परम्परागत शालाओं के विद्यार्थियों की पर्यावरण अध्ययन विषय में उपलब्धि स्तर का तुलनात्मक अध्ययन जिला सीहोर के संदर्भ" विषय पर किया। जिस के उद्देश्य थे शिक्षा गारंटी शालाओं एवं परम्परागता शालाओं के विद्यार्थियों की पर्यावरण अध्ययन की उपलब्धि की तुलना करना। जिस में उन्होनें पाया कि शिक्षा गारंटी स्कूल और परम्परागत स्कूल के विद्यार्थियों की पर्यावरण अध्ययन की उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

रघुवंशी माया (2004) "होशंगांबाद जिले के 12 वीं स्तर के छात्र छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि का उनकी बुद्धि उपलब्धि एवं अभिप्रेरणा के परिपेक्ष में तुलनात्मक अध्ययन" इन्होनें पाया कि उच्च शैक्षिक उपलब्धि स्तर के विद्यार्थियों का अध्ययन निम्न शैक्षिक उपलब्धि स्तर वाले विद्यार्थियों की अपेक्षा अधिक है। अतः उच्च शैक्षिक उपलब्धि समूह के विद्यार्थी बुद्धि में श्रेष्ठ है। छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान छात्रों की अपेक्षा अधिक है। एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि उच्च पायी गयी।

जैन संध्या (2011) "सर्वाशिक्षा अभियान के अन्तर्गत प्रारंभिक शिक्षा के लोकव्यापीकरण का रायसेन जिले के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि एवं सृजानात्मकता के संदर्भ में तुलनात्मक अध्ययन" पर किया। जिस के उद्देश्य थे ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि का अध्ययन करना। और ग्रामीण व शहरी छात्र/छात्राओं की शैक्षणिक उपलब्धि एवं सृजनात्मकता में सह–सम्बन्ध का अध्ययन करना। जिस में उन्होनें पाया कि ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं है और दोनों शैक्षणिक उपलब्धि समान है। एवं ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि एवं सृजनात्कता में धनात्मक सह–सम्बंध है।

कौसर सालेहा (2012) "माध्यमिक स्तर के विद्यालयों एवं मदरसों के विद्यार्थियों की उर्दू ,गणित एवं विज्ञान विषय में शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन" किया इन्होंने अपने शोध अध्ययन हेतु 150 छात्रों का चयन किया अध्ययन के निष्कर्ष में पाया गया कि शासकीय शाला के विद्यार्थियों की गणित एवं विज्ञान विषय में शैक्षिक उपलब्धि का स्तर अच्छा है।

2.3.0 पूर्व अनुसंधानों से प्राप्त निष्कर्ष

सृजनत्मकता से प्राप्त निष्कर्ष

- हास्य व्यक्तित्व, सृजनशीलता व निराशा का उत्पादक अधिक है। प्रत्येक विद्यार्थी का व्यक्तित्व, अहम्, सामाजिकता, साहसीपन अलग–2 होता है। इनकी सृजनशीलता का सम्बन्ध हास्य क्षमता से होता है। जिन विद्यार्थियों में हास्य क्षमता कम होती है उनमें तनाव अधिक पाया जाता है।
- विनम्र, हठी तथा तनुक मिजाजी बी0 ए0 50 छात्राध्यापक तथा सुन्दर दिखने वाले छात्राध्यापकों पर शुद्वता के प्रभाव के क्रान्तिक अनुपात में महत्वपूर्ण अन्तर पाया गया। आत्मविश्वासी तथा विनम्र बी0ए0 50 छात्राध्यापकों एवं हठी एवं सुन्दर दिखने वाले छात्राध्यापकों पर वास्तविकता के प्रभाव में महत्वपूर्ण अन्तर पाया गया।
- शहरी विद्यार्थियों की बुद्धि का माध्य ग्रामीण विद्यार्थियों की तुलना में सार्थक रूप से उच्च पाया गया। विज्ञान के विद्यार्थियों की बुद्धि का माध्य कला के विद्यार्थियों की तुलना में सार्थक रूप से उच्च पाया गया।
- अधिक सृजनशील एवं कम सृजनशील छात्र/छात्राओं के समायोजन के संदर्भ में सार्थक अंतर नही है। सृजनशील एवं असृजनशील छात्र/छात्राओं की वार्षिक उपलब्धि के संदर्भ में सार्थक अंतर है।
- ग्रामीण और शहरी विद्यार्थियों की उपलब्धि में अंतर है। ग्रामीण और शहरी विद्यार्थियों की सृजनात्मकता में अंतर है। ग्रामीण और शहरी छात्रों

की उपलब्धि में अंतर है। ग्रामीण और शहरी छात्राओं की उपलब्धि में अंतर है। ग्रामीण और शहरी छात्रों की सृजनात्मकता के परिप्रेक्ष्य में अंतर नही है। ग्रामीण ओर शहरी छात्राओं की सृजनात्मकता में अंतर है। ग्रामीण छात्र/छात्राओं की सृजनात्मकता में अंतर है। शहरी छात्र/छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में कोई अंतर नहीं है। शहरी छात्र/छात्राओं की ग्रामीण छात्र/छात्राओ की सृजनात्कता में कोई अंतर नहीं है।

- संवेगात्मक बुद्धि तथा इसके 10 क्षेत्रों–स्व–सचेतता, परानुभूति, स्व–अभिप्ररेणा, सांवेंगिक स्थिरता, सम्बंधों का प्रबंधन, सत्यनिष्ठा, स्व–विकास, मूल्योन्मुखता, वचनवद्धता तथा परोपकारिता का वैज्ञानिक सृजनात्मकता पर प्रभाव पड़ता है और यह भी पाया गया कि छात्र–छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि का विकास करके उनकी वैज्ञानिक सृजनात्मकता में कुछ मात्रा तक वृद्धि की जा सकती है।
- पब्लिक स्कूलों के अनुकूल एवं उद्दीप्ति वातावरण के कारण गुरूकुल तथा सरकारी स्कूलों की अपेक्षा वहाँ के विद्यार्थियों की संवेगात्मक कुशलता और योग्यता तथा सृजनात्मक चिंतन की क्षमता उच्च प्राप्त हुई और गुरूकुल स्कूलों का वातावरण सरकारी स्कूलो के वातावरण से अधिक प्रभावपूर्ण होने के कारण वहाँ छात्रों में संवेगात्मक बुद्धि से सम्बंधित लक्षण सरकारी स्कूलों की अपेक्षा अधिक पाये गये परन्तु गुरूकूल तथा सरकारी स्कूलों के विद्यार्थियों के सृजनात्मक चिंतन में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।
- माध्यमिक स्तर के शिक्षक/शिक्षिकाओं की सृजनात्मकता में सार्थक अंतर नही है। माध्यमिक स्तर के शिक्षक एवं शिक्षिकाओं की अध्यापन अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नही है।

शैक्षिक उपलब्धि से प्राप्त निष्कर्ष

- गणित की उपलब्धि में बालक–बालिकाओं तथा शहरी विद्यार्थी और ग्रामीण विद्यार्थी समान पाये गये पठन बोध की उपलब्धि में बालिकाऐं बालको से श्रेष्ठ पाये गयी।
- बालिकाओं की गणित भाषा एवं पर्यावरण की उपलब्धि में विशेष अन्तर नहीं पाया गया।
- बालकों की तुलना में बालिकाओं की उपलब्धि पर दक्षता आधारित शिक्षण का प्रभाव सर्वाधिक उपलब्धि परक पाया गया।
- छात्र – छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में अन्तर पाया गया।
- छात्रों की अपेक्षा छात्राओं में शैक्षिक उपलब्धि अधिक होती हे।
- सह शिक्षा विद्यालय की बालक तथा बालिकाओं की भाषा, गणित एवं विज्ञान विषय में उपलब्धि समान होती है।
- गणित या विज्ञान अध्ययन में उपलब्धि का भाषा की उपलब्धि के साथ धनात्मक सह – सम्बंध होता है।
- उच्च तथा निम्न शैक्षणिक उपलब्धि में अन्तर पाया गया।
- छात्राओं में चिन्ता छात्रों की अपेक्षा अधिक पाई गयी।
- सह शिक्षा विद्यालय में उपलब्धि अधिक पाई गयी।
- सह शिक्षा माध्यमिक विद्यालय और पृथक बालिका माध्यमिक विद्यालय के बालक–बालिकाओ की विज्ञान विषय की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर है।
- बालिकाओं की तुलना में बालक अधिक सार्थक उपलब्धि और अभिप्रेरणा रखते है।
- बालक और बालिकाओं की सृजनात्मकता और उपलब्धि में धनात्मक और सार्थक सह – सम्बंध होता है।

प्रस्तुत अध्याय में वर्तमान शोधकार्य से संबंधित पूर्व अनुसंधानों का पुनरावलोकन किया गया है। जो शोध समायोजनशीलता से संबंधित हुए है उनकी समीक्षा की गई है। साथ ही साथ अनुसंधान कार्य के निष्कर्षो का विश्लेषण करते हुए उन क्षेत्रों की पहचान की गयी, जिनमें अनुसंधान कम अथवा नहीं हुए है।

=======***=======